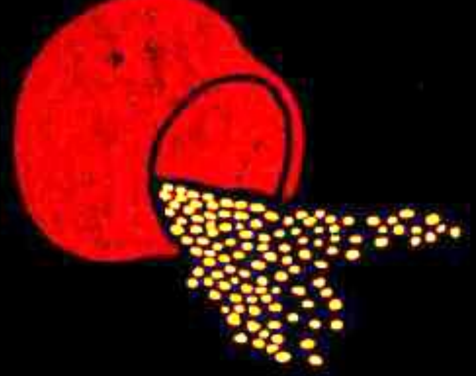
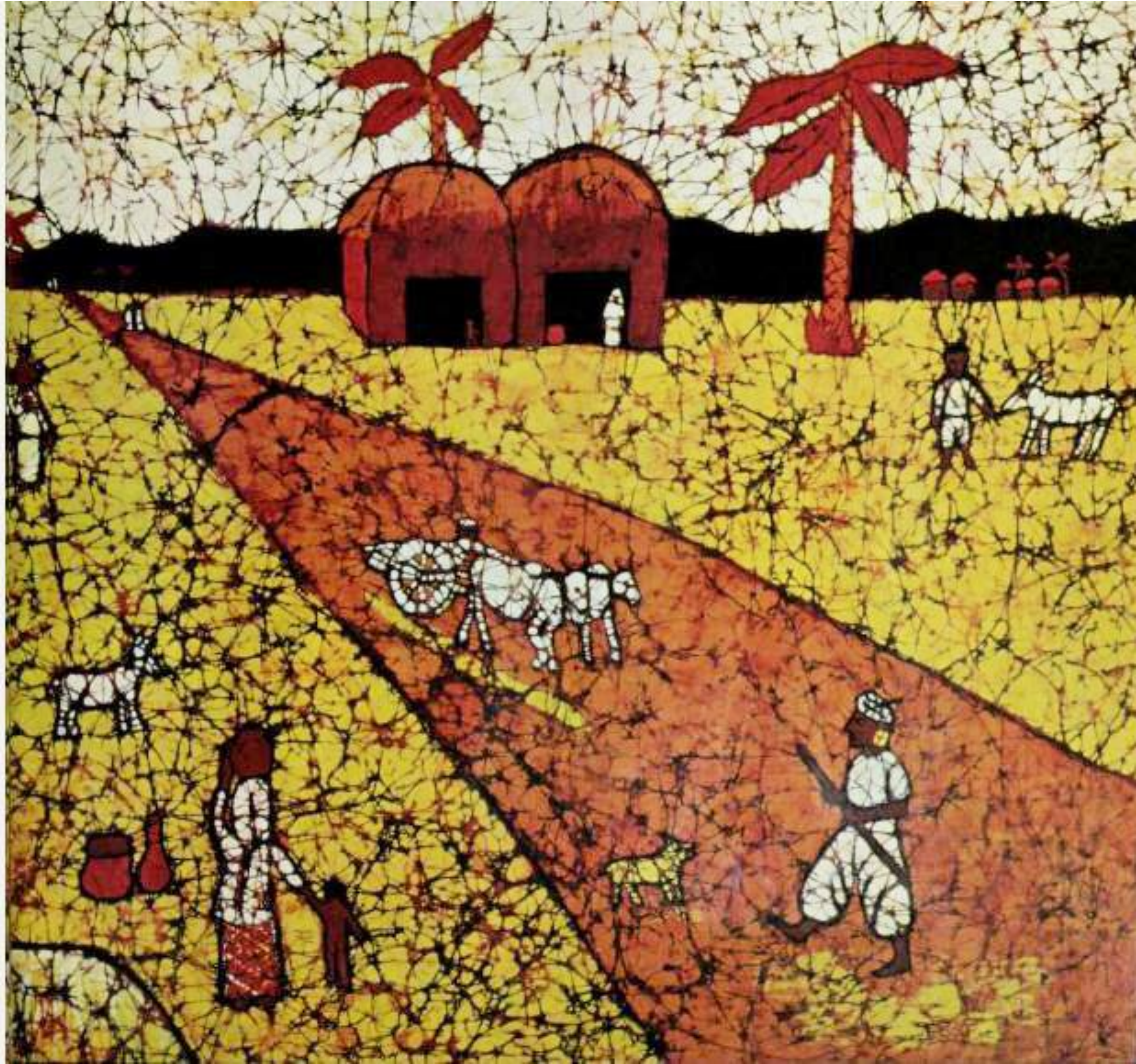
जादुई हांडी



बहुत वर्ष पहले की बात है. एक आदमी अपनी पत्नी और बहुत सारे बच्चों के साथ भारत के किसी गाँव में रहता था. वह बहुत गरीब था. उसकी पत्नी सदा दुःखी रहती थी क्योंकि उनके पास कभी भी पर्याप्त खाना न होता था और उनके बच्चे भूखे और उदास रहते थे. गरीब आदमी अपने परिवार को लेकर चिंतित रहता था, उसे डर था कि सब भूख से मर जायेंगे.



एक दिन जब वह बहुत भूखे और दुःखी थे, उस गरीब आदमी ने निश्चय किया कि अपने परिवार को बचाने के लिए वह कोई न कोई प्रयास करेगा. उसने अपने परिवार को अलविदा कहा और माँ दुर्गा की आराधना करने के लिए एक एकांत जगह की खोज में वह घर से निकल पड़ा. कई गाँवों और देहातों से गुज़रता हुआ वह आगे बढ़ता गया. लेकिन हर जगह उसे लोग मिले. उसे ऐसी कोई जगह न मिली जहाँ वह नितांत अकेला था.



अंततः वह एक जंगल के किनारे पहुंचा. उसे लगा कि जंगल के अंदर उसे कोई एकांत जगह अवश्य मिल जायेगी. वह जंगल के अंदर तब तक भटकता रहा जब तक कि वह एक ऐसी खुली जगह नहीं पहुंच गया जहाँ उसे लगा कि अबतक कोई न आया होगा. उस जगह वह माँ दुर्गा की आराधना करने लगा.



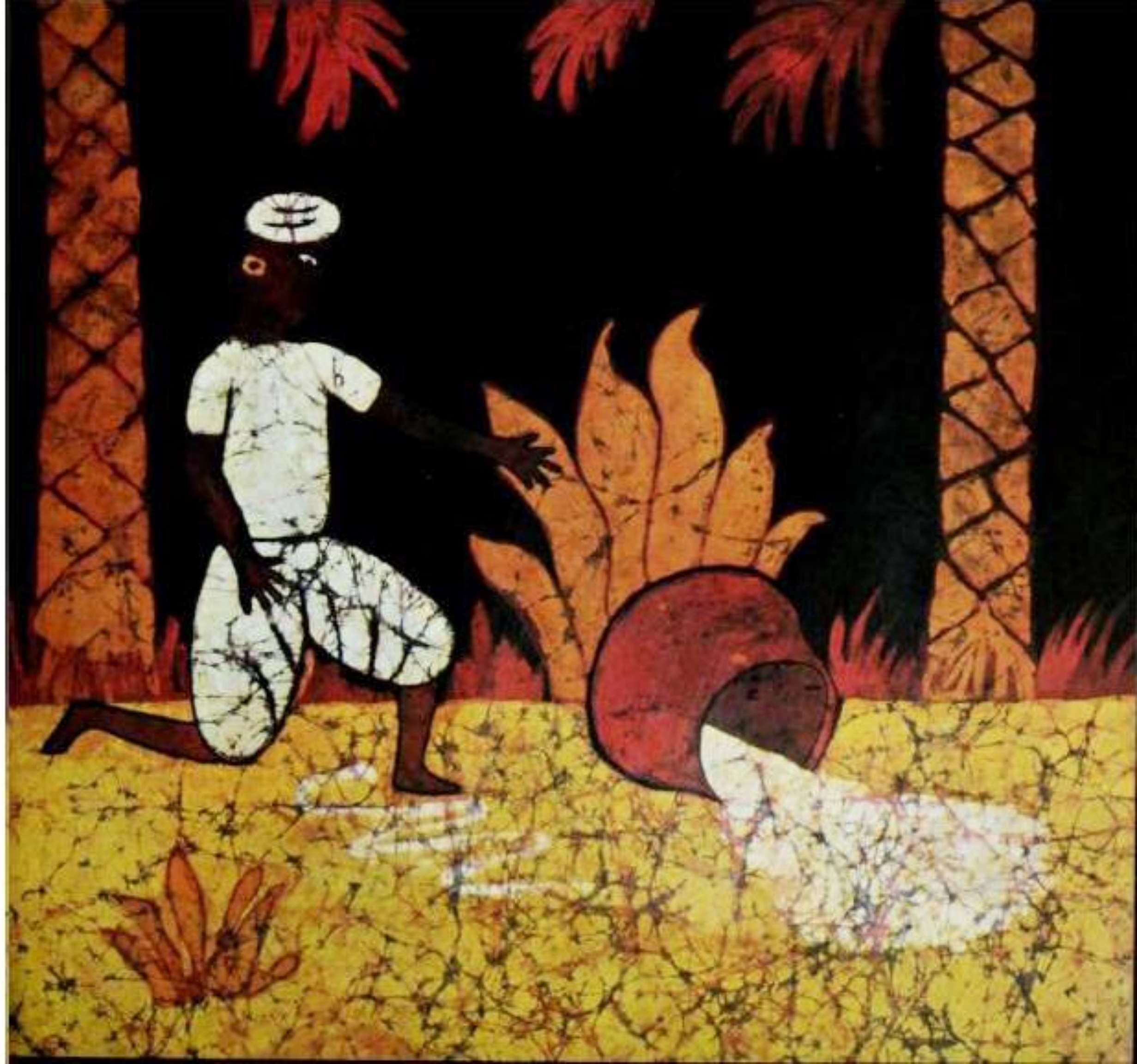
यद्यपि वह गरीब था, फिर भी वह एक अच्छा और धार्मिक व्यक्ति था. हर दिन कुछ खाने या पीने से पहले वह स्नान कर, माँ दुर्गा की पूजा करता था. इसलिए जंगल में माँ दुर्गा ने उसकी पुकार सुनी और उसके सामने प्रकट हुईं. “शीघ्र ही तुम्हारे और तुम्हारी पत्नी और बच्चों के खाने के लिए तुम्हारे पास पर्याप्त चावल होंगे,” देवी ने उसे वरदान दिया.



अचानक दुर्गा माँ अदृश्य हो गयी. मिट्टी की एक हांडी उसी जगह प्रकट हो गई जिस जगह दुर्गा खड़ी थीं. गरीब आदमी ने बड़े दुःखी मन से उस हांडी को देखा. वह मिट्टी की एक साधारण हांडी थी. “अगर इस में पकाने के लिए मेरे पास कुछ है ही नहीं,” उसने सोचा, “तो इस हांडी का क्या लाभ है?” फिर भी उसने मिट्टी की हांडी उठा ली और वापस घर की ओर चल दिया.



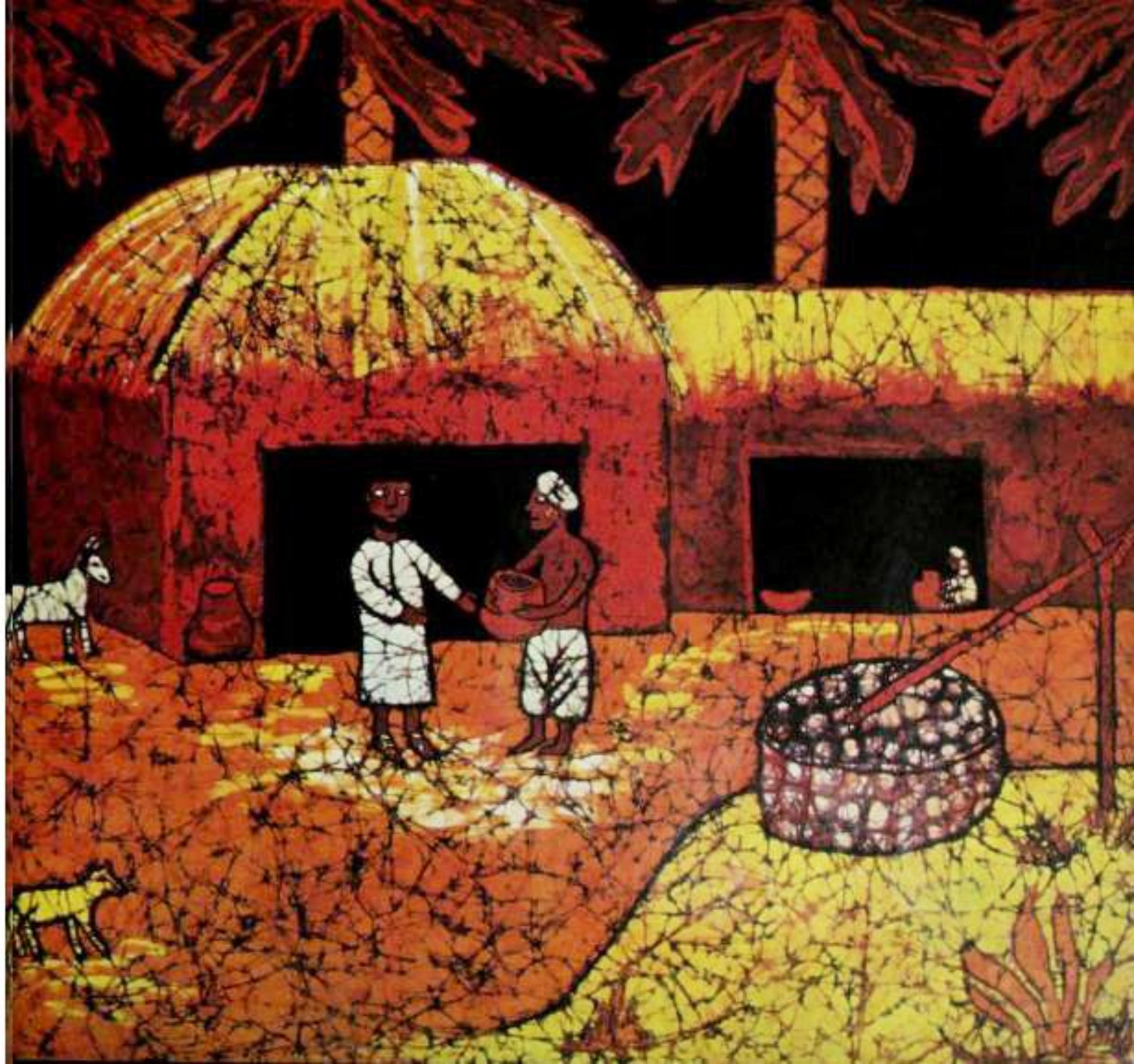
उस घने जंगल में चलना कठिन था और शीघ्र ही जड़ों और बेलों से ठोकर खा कर वह गिर पड़ा . उसके गिरते ही हांडी उसके हाथों से छूट कर ज़मीन पर लुढ़क गई. जैसे ही हांडी पलटी, उत्तम किस्म के चावल हांडी से निकल कर नीचे गिरने लगे. गरीब आदमी आश्चर्य से चावलों को एकटक देखता रहा गया. अब उसे समझ आया कि माँ दुर्गा ने उसे एक जादुई हांडी दी थी और अब उसके परिवार के पास खाने के लिए खूब सारे चावल होंगे.



वह भूखा था, लेकिन स्नान करने के बाद माँ दुर्गा की पूज़ा किये बिना, वह हांडी से निकले चावल नहीं खा सकता था. परन्तु ज़मीन पर बिखरे चावलों को वह व्यर्थ गंवाना नहीं चाहता था. इसलिए गिरे हुए सारे चावल उसने इकट्ठे किये और उन्हें एक पोटली में बाँध लिया. फिर चावलों की पोटली और जादुई हांडी लेकर वह वापस चल पड़ा.



आखिरकर वह जंगल से बाहर आया और विश्राम करने हेतु निकट के एक गाँव में रुक गया. उस गाँव में एक सराय थी जिसके निकट एक कुआं था. कुँए के पानी से स्नान करने से पहले वह सराय के मालिक के पास गया और उससे बार-बार निवेदन किया कि उसकी हांडी को संभाल कर रखे.



जब गरीब आदमी स्नान करने और माँ दुर्गा की पूजा करने और अपने चावल खाने के लिए सराय से बाहर चला गया तो सराय का मालिक उस हांडी को बड़े गौर से देखने लगा. वह जानने को उत्सुक था कि उस आदमी ने इतनी साधारण हांडी का ख़ास ध्यान रखने को क्यों कहा था. उसने हांडी के अंदर देखा, पर अंदर कुछ नहीं था. उसने उसका बाहर से निरीक्षण किया, परन्तु बाहर भी कुछ दिखाई न दिया. फिर हांडी के निचले भाग को देखने के लिए उसको उल्टा कर दिया. हांडी से चावल निकलने शुरू हो गये. सराय का मालिक समझ गया कि वह एक जादुई हांडी थी, जिसे वह अपने पास रखना चाहता था. उसने चालाकी से जादुई हांडी को उसी नाप और आकर की एक साधारण हांडी से बदल दिया. फिर उसने अपनी पत्नी और बेटों को झटपट बुलाया ताकि वह उन्हें बता सके कि सौभाग्य से उन्हें एक जादुई हांडी मिल गई थी.



स्नान करने के बाद उस गरीब आदमी ने माँ दुर्गा की पूज़ा की और फिर वह चावल खाए जो उसे जादुई हांडी से मिले थे. उसके बाद वह सराय लौट आया और सराय के मालिक ने जो हांडी उसे दी उसे लेकर अपने घर की ओर चल दिया. उसे ज़रा भी संदेह न हुआ कि वह जादुई हांडी न थी. गाँवों और देहात से जाते हुए वह अपने परिवार के विषय में सोच रहा था. वह कल्पना कर रहा था कि जादुई हांडी से मिलने वाले बढ़िया चावल देख कर वह कितने आश्चर्यचकित होंगे.

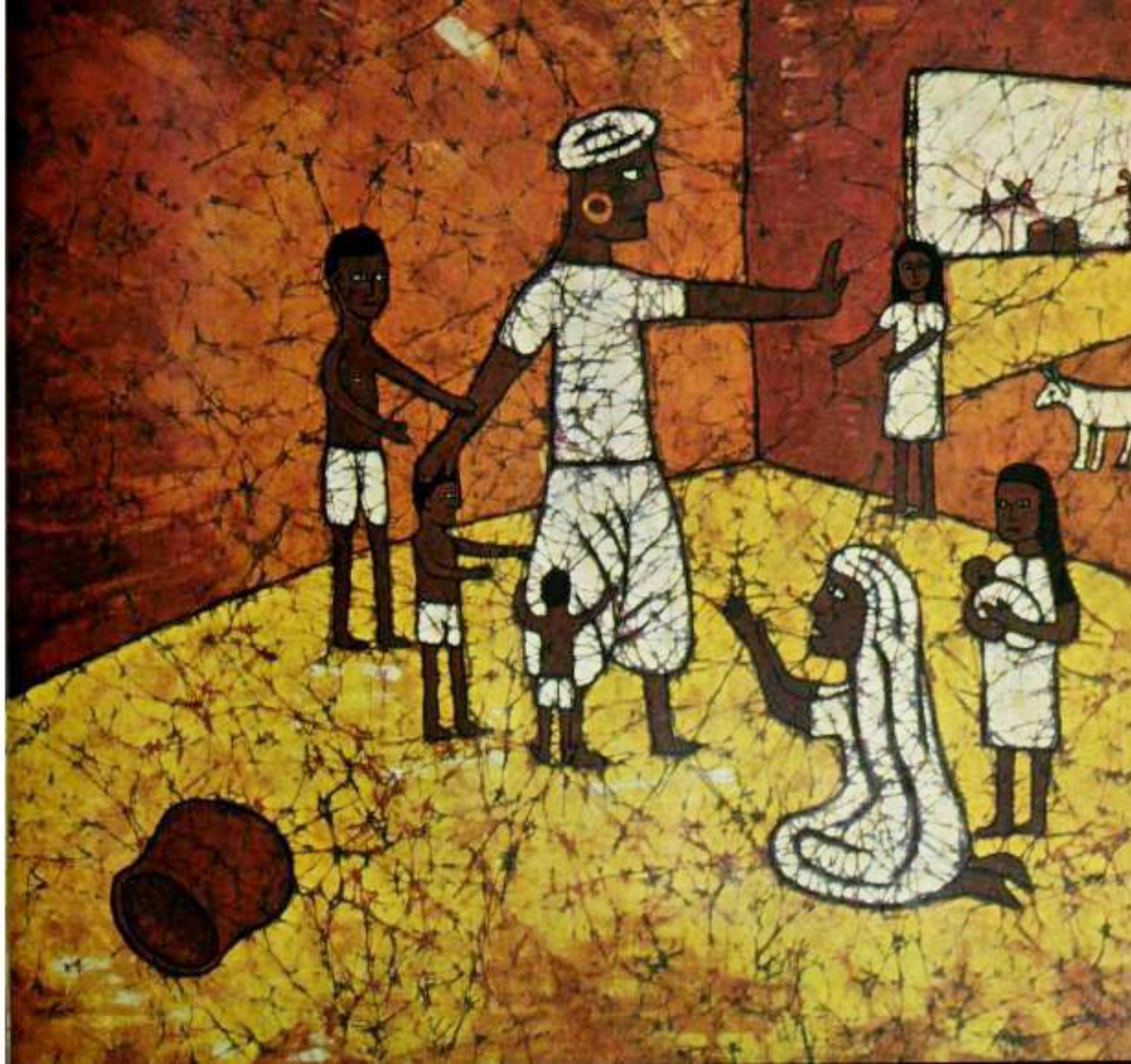


अंततः गरीब आदमी अपने गाँव पहुंचा. भूख से बेहाल उसकी पत्नी और बच्चे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे. उसने प्रसन्नता से उन सब को बताया कि अब उन्हें कभी भूखा न रहना पड़ेगा. उसने झटपट उस हांडी को पलटा. उसे आशा थी कि उलटते ही हांडी से चावल गिरने लगेंगे और यह देखकर उसके बच्चे खुशी से उछल पड़ेंगे. लेकिन कोई चावल न गिरे और भूख से उसके बच्चे दुःखी ही रहे. उसकी पत्नी को लगा कि जंगल जाकर उसका बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी अन्यथा एक साधारण से हांडी को वह जादुई हांडी कैसे समझ बैठा था.



गरीब आदमी को अपनी आँखों पर विश्वास न हो रहा था क्योंकि वह जानता था कि जंगल में उसे निश्चय ही एक जादुई हांडी दी गई थी. वह बहुत दुःखी हुआ. उसे अचानक ध्यान आया कि सराय में उसने अपनी हांडी सराय के मालिक को संभाल कर रखने के लिये दी थी. उसे लगा कि सराय के मालिक ने उसकी हांडी चुरा ली थी और उसकी बदले उसे एक साधारण हांडी दे दी थी.

गरीब आदमी के परिवार ने उससे विनती की कि वह उन्हें छोड़ कर फिर से न जाए. उन्हें लग रहा था कि वह अपना विवेक खो चुका था. उन्हें भय था की वह जंगल में कहीं अपना रास्ता न भूल जाए या फिर जंगली जानवर उसे मार कर खा न जाएँ. लेकिन वह आदमी जानता था कि अपनी जादुई हांडी उसे सराय के मालिक से वापस लेनी ही थी. इसलिए उसने एक बार फिर अपने परिवार को अलविदा कहा और चल दिया.



वह आदमी उस सराय में पहुंचा जहाँ उसने अपनी जादुई हांडी मालिक के पास रखी थी. “मेरी हांडी मुझे लौटा दो,” उसने मालिक से कहा. लेकिन सराय का मालिक हँसने लगा. उसने अपने बेटों को कहा कि उस आदमी को लाठियों से मार कर भगा दो. वह आदमी पूरी तरह निराश हो गया. उसने जंगल के अंदर जाकर माँ दुर्गा से सहायता मांगने का निश्चय किया.



गरीब आदमी जंगल की भीतर, बहुत भीतर, एक ऐसी जगह पहुंचा जहाँ उसे विश्वास था कि कोई आदमी न आया होगा. वहाँ रुक कर वह माँ दुर्गा की आराधना करने लगा. माँ दुर्गा ने उसका पुकार सुनी और तुरंत प्रकट हुईं. “मैं तुम्हें एक और जादुई हांडी दूंगी,” माँ दुर्गा ने कहा. “इसका उपयोग बुद्धिमानी से करना.” फिर वह अदृश्य हो गईं. जहाँ वह खड़ी थीं वहीं एक मिट्टी की हांडी प्रकट हो गई. यह पहली हांडी जैसी ही थी.



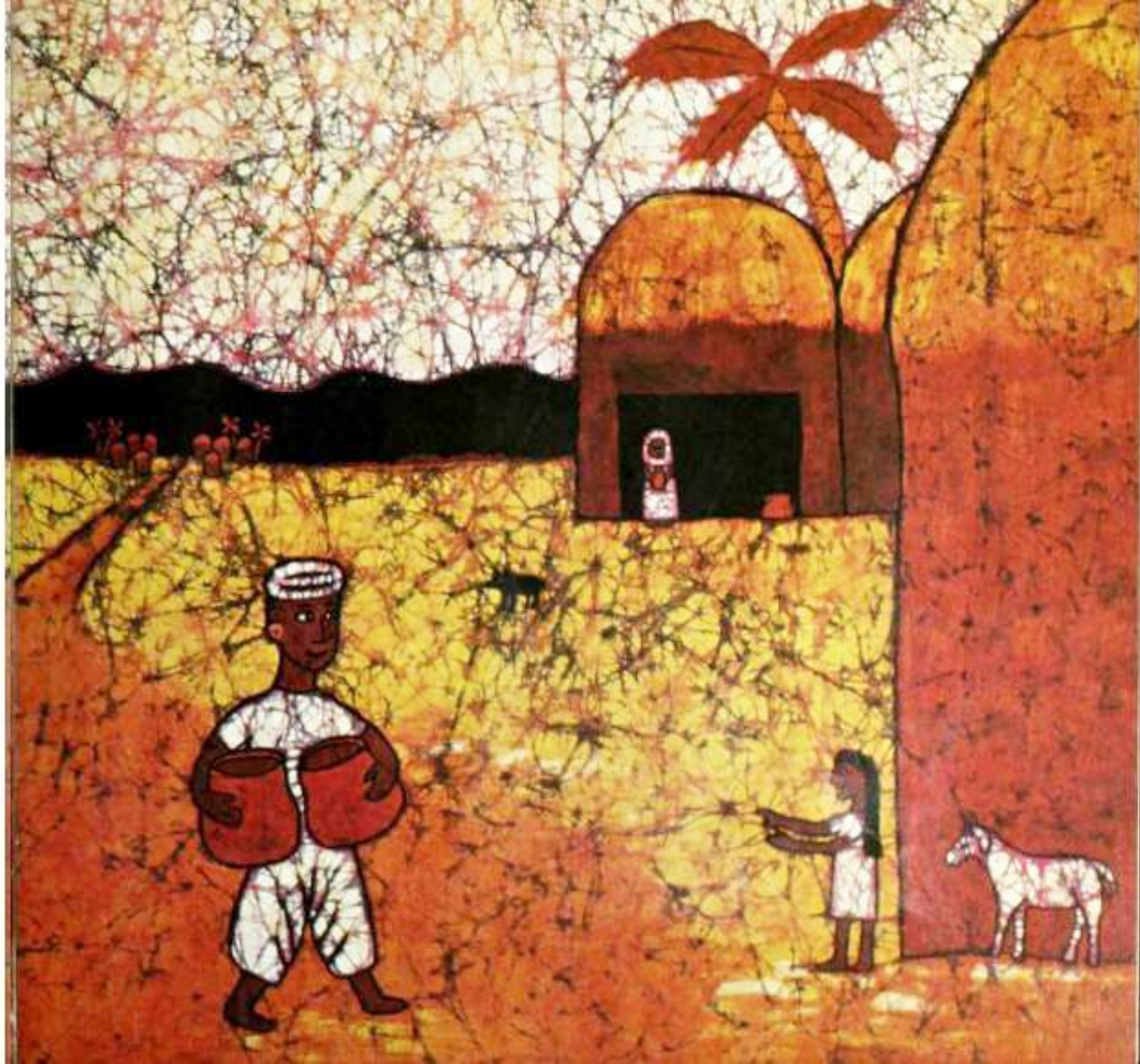
उस आदमी ने उस हांडी को झटपट उठा लिया और उसे पलट दिया. उसे लगा था कि उस हांडी से भी चावल गिरने शुरू हो जायेंगे. लेकिन चावलों के बजाए राक्षसों का एक दल उसमें से बाहर आया और उस आदमी को मारने-पीटने लगा. भाग्य से उसने हांडी को तुरंत सीधा कर दिया. राक्षसों ने उसे पीटना बंद कर दिया और कूद कर हांडी के अंदर चले गये. गरीब आदमी को अब समझ आया कि माँ दुर्गा ने जब कहा था कि बुद्धिमानी से हांडी का उपयोग करना तो उनका तात्पर्य क्या था.



एक बार फिर वह आदमी सराय आ गया. उसे दूसरी हांडी के साथ आता देख कर सराय का मालिक हैरान हो गया. वह सोचने लगा कि इस नई हांडी के अंदर कौन सा खज़ाना छिपा था. सराय के मालिक ने अपने बेटों को बुलाया ताकि वह दूसरी हांडी भी उस आदमी से हड़प सकें. लेकिन गरीब आदमी ने तुरंत दूसरी जादुई हांडी को उल्टा कर दिया. उस हांडी से राक्षसों का दल बाहर आ गया और सराय के मालिक और उसके बेटों की पिटाई करने लगा. उन्होंने उससे दया की भीख मांगी. "मेरी जादुई हांडी मुझे लौटा दो," गरीब आदमी ने कहा. जब सराय के मालिक ने वचन दिया कि उसकी हांडी वह लौटा देगा तो उस आदमी ने जादुई हांडी सीधी कर दी. सारे राक्षस उसके अंदर गायब हो गये.



अपने दोनों जादुई हांडियां अपने हाथों में पकड़े हुए गरीब आदमी घर की ओर चल दिया. उसे देखकर उसके परिवार की ख़ुशी का ठिकाना न रहा. उन्हें डर था कि शायद वह लौट कर न आये. यह सोच कर कि दूसरी जादुई हांडी- जिसके अंदर राक्षस थे- की उसे कभी आवश्यकता पड़ सकती थी, उस आदमी ने झटपट एक जगह खोज कर उस हांडी को छिपा कर रख दिया.



फिर उसने पहली जादुई हांडी को पलटा. जैसे ही उसमें से बढ़िया चावल बाहर गिरने लगे उसकी पत्नी और बच्चों के चेहरे आश्चर्य और प्रसन्नता से खिल उठे.

उस दिन के बाद से गरीब आदमी और उसके परिवार को खाने के लिए सदा सबसे अच्छे चावल मिलते थे. वास्तव में, इतने चावल उनके पास थे कि गाँव का हर व्यक्ति उन्हें खा सकता था. गाँव में अब कोई भी भूखा न रहता था. और गरीब आदमी अब गरीब न था. वह और उसका परिवार जीवन भर सुख और प्रसन्नता से रहे.

समाप्त

